डा० विजय नाथ ज्योतिषाचार्य
2F, St.-11, Zone-I
Khursifar
Bhilai, Durg (C.G)

शिक्षा एंव संस्कार
(ग्रहों की भूमिका)

भारतीय संस्कृति हमेशा से ही श्रेष्ठ माना गया है, हमारे ऋषि, मुनियों, महर्षियों ने अपनी मेहनत श्रम, तप के द्वारा बहुत ही अमूल्य ज्ञान दिया है हम सब उनके ऋणि है।
हमारी सभ्यता वेदों की उत्पत्ति से हुयी है, शिक्षा, संस्कार ज्ञान–तप, संयम, नियम, पूजा–पाठ सबका का कारण वेद की है। शिक्षा संस्कार को बनाये रखने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करती है इससे हमें संस्कार का पता चलता है। संस्कार कही से टपकता नही, पेड़ों से फलता नही कोई बिकने वाली वस्तु नही यह हमें वंश परम्परागत नियम के तहत मिलता है। विद्वानो के अनुसार दश महाविद्यालओं मे प्रथम विद्या आदि, जिसको दक्षिणा काली के नाम से जाना जाता है। यह ऐसी उर्जा–शक्ति है जो हमारे चित्त से सम्बन्ध रखती है समस्त विधाओ की जननी मानी गयी है जो संस्कार को Soul has been able to get freedom from kalehakra.
हिन्दु शास्त्र के अनुसार 16 प्रकार के संस्कार माने गये है जिससे शिक्षा भी है इन्हीं संस्कारो के बीच हमारी दैनिक गतिविधियों चलने वाली प्रक्रिया है।

पिपुसधारा के अनुसार–

छन्दः पादौ तु वेदरूप हस्त्रौ कल्पोथ पठ्यते।
ज्योतिषमयनं चछुर्निरूक्तं श्रोत्रमुच्यते।।
शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरण स्मृतम्।
वस्मात साडमधीत्यैव ब्रहमलोके महीयतें।।

अर्थात,
वेदरूपी पुरूष को छन्द शास्त्र पैर है, दोनो हाथ कल्प है ज्योतिष शास्त्र स्वंय नेत्र है, निरूक्त श्रोत्र है, शिक्षा वेद की नासिका तथा मुख व्याकरण है। इससे यह पता चलता है कि वेद ही मुख्य है यही से शिक्षा संस्कार जीवन मिला हैं। सभी ज्ञान का स्त्रोत वेद ही है। संस्कार जन्म से ही मिलता है शिक्षा उसका सृजन करती है। संस्कार के अर्न्तगत सुबह का उठना, बड़ों का आशीर्वाद माता–पिता गुरूजनो की सेवा तथा आज्ञा का पालन करना, सूर्य उपासना, पूजा–पाठ नियम आचार–विचार धर्म–अधर्म पाप–पूण्य का ज्ञान कराती है।

आधुनिक शिक्षा में संस्कार का स्तर गिरता जा आ रहा है, इसको सही दिशा में लाना हम सबका कर्तव्य है। चूंकि यह सब वेद का ही अंग है जिसके ज्योतिष भी एक अंग माना गया है। धर्म में संस्कार के तीन निश्चित मार्ग–

1. कर्म
2. उमासना
3. ज्ञानमार्ग है।

प्रथम कर्म के अन्तर्गत पिछला कर्म हमारा कैसा है अच्छा या खराब यह जानने के लिए ज्योतिष शास्त्र का सहारा लेना पड़ता है ऐसी मान्यता है। कहा गया–

पूर्व जन्म कृतम पापम् व्यधिरूपेणवाधते।

अर्थात पूर्व जन्म में किया गया कार्य ही हमारे सुख–दुख का कारण है जिसमें पापी गृह यानी, राहु केतु तथा मंगल की शुभता/अशुभता पर निर्भर करता है इसके लिए जन्म पत्रिका मे बने 12 भावों में पंचम भाव पिछला तथा नवमभाव वर्तमान कर्म ही बाल करता है। वही पर प्रत्येक ग्रह में भी अपने व्यवहार आचरण गुणों को दर्शाते हैं जैसे चन्द्रमा मन का कारक, सूर्य आत्म मंगल–उर्जा शक्ति साहस, बुद्ध बुद्धि, वृहस्पति–ज्ञान, शुक्र सुन्दरता शनि–कर्म राहु केतु अच्छा/खराब को दर्शाते है। इन्ही आधार पर कर्मो का लेखा–जोखा हमारी जन्म पत्रिका में निहित है। अतः शिक्षा संस्कार तथा मानवीय मुल्यों को संतुलन बनाने में ज्योतिष शास्त्र महत्वपूर्ण है। समस्त मानव अपने भविष्य को लेकर जिज्ञासा जाहिर करता है।

डा0 विजय नाथ ज्योतिषाचार्य
2F, St.-11, Zone-I
Khursifar
Bhilai, Durg (C.G)